भारत दुनिया का सबसे बड़ा आम उत्पादक देश है, लेकिन वैश्विक आम व्यापार में इसकी हिस्सेदारी एक फीसदी से भी कम है। इसकी एक वजह है पैकेजिंग के वे तौर-तरीके अपनाया जाना (जैसा कि फोटो में दिख रहा है), जो लंबी दूरियों को तय करने में लगे समय तक फलों को ताजा और आकर्षक नहीं बनाए रख पाते हैं। छोटे किसान अपने उत्पादों को और ज्यादा बाजारों तक ले जा पाएं और पैदावार का ज्यादा बेहतर मूल्य पा सकें, इसके लिए अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी (यूएसएड) ने सितंबर में मुंबई में एक कॉन्फ्रेंस प्रायोजित की। कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य आमों की पैकिंग के नए और व्यावहारिक तरीके सुझाना था। इसमें भाग लेने वाले आम उत्पादकों, व्यापारियों, वितरकों, खुदरा व्यापारियों और पैकेजिंग उद्योग के प्रतिनिधियों ने नई पैकिंग तकनीक के नमूनों, खाद्य उत्पादों की सुरक्षा, गुणवत्ता के मानकों और उत्पादों को ज्यादा मूल्यवान बनाने वाले अंतरराष्ट्रीय तरीकों पर चर्चा की।

राकेश कुमार सिंह © यू. ए. ई.-इन्फोर्मेशन

समाचार गुलदस्ता

रॉयटर्स विलियम्स © ए.पी. डब्ल्यू डब्ल्यू पी.

ये हैं तो भारतीय सेना की गोरखा रेजिमेंट के सैनिक, पर दिखाई दे रहे हैं हवाई द्वीप के ओआहू के जंगलों में। सितंबर में वहिवा, हवाई स्थित शोफील्ड सैन्य अड्डे पर 140 भारतीय सैनिकों और भारतीय वायुसेना के 20 कमांडो ने अमेरिका की 25वीं इन्फैंट्री डिवीजन के सैनिकों के साथ 18 दिनों तक आतंकवाद की रोकथाम के कौशल का अनुभव लिया। विदेश में भारतीय सेना के इस सबसे बड़े संयुक्त सैन्य अभ्यास का मकसद भारतीय और अमेरिकी सैनिकों को एक साथ काम करना सिखाना था। इन सैनिकों ने शहरों और जंगलों के माहौल के बीच सैन्य अभ्यास किया।

अतुल गवांडे, भारतीय मूल के अमेरिकी सर्जन, प्रोफेसर और लेखक हैं। इन्हें अगले पांच साल में खर्च करने के लिए पांच लाख डॉलर दिए गए हैं, जिन्हें वह जैसे चाहें खर्च कर सकते हैं। वह इस साल का 'जीनियस अवॉर्ड' जीतने वाले 25 विजेताओं में से एक हैं। यह पुरस्कार हर साल शिकागो स्थित मैकआर्थर फाउंडेशन द्वारा दिया जाता है। अनुदान का मकसद प्रतिभाशाली लोगों को यह जानने के लिए प्रोत्साहित करना है कि कुछ समय के लिए अपनी वित्तीय चिंताओं से पूरी तरह मुक्त होने पर वे क्या उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। चालीस वर्षीय गवांडे अमेरिका आकर बसे एक भारतीय दंपति के बेटे हैं। वह हार्वर्ड मेडिकल स्कूल और बोस्टन स्थित *ब्रिगैम* एंड वीमन्स हॉस्पिटल में सर्जरी के असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। साथ ही, वह न्यूयॉर्क की एक पत्रिका के लेखक भी हैं। यह पत्रिका शल्य क्रिया को सुरक्षित बनाने के तौर-तरीकों की खोज पर केंद्रित है।

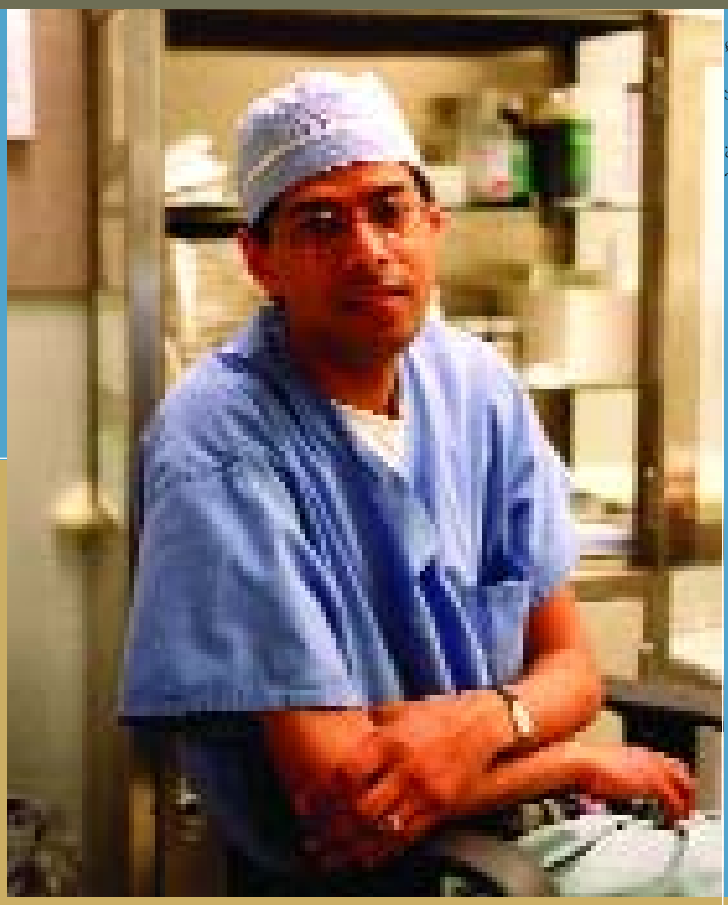

रेव लिंकन / हार्वर्ड न्यूज ऑफिस

टी. जी. वेंकटेश

अमेरिकी राजदूत डेविड सी. मल्फर्ड ताड़पत्र पर लिखी एक ऐतिहासिक पांडुलिपि का मुआयना करते हुए। यह उन तमाम दुर्लभ पांडुलिपियों और हस्तलिखित किताबों में से एक है, जिनके संरक्षण के लिए बेंगलूर स्थित यूनाइटेड थियोलॉजिकल कॉलेज को 35 हजार डॉलर का अनुदान दिया गया है। इस अनुदान की पहली किस्त राजदूत के संस्कृति संरक्षण कोष से सितंबर में कॉलेज के प्रिंसिपल रेव ओ. वी. जथन्ना को दी गई। इस धनराशि की मदद से पांडुलिपियों में दी गई सूचनाओं को ऐसी माइक्रोफिल्मों में तब्दील करना भी मुमकिन हो सकेगा, जिनका उपयोग शोधकर्ता कर सकेंगे।

विकास गहलोत

सितंबर में अमेरिकी राजदूत डेविड सी. मल्फर्ड (बीच में) और भारत में विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रतिनिधि सलीम (दाएं) ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस मौके पर संशोधित राष्ट्रीय तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम के निदेशक डॉ. एल. एस. चौहान (बाएं) भी मौजूद थे जिनके कामकाज को यूएसएड की सहायता हासिल होती है। समझौते के तहत अमेरिका विश्व स्वास्थ्य संगठन को तपेदिक से निपटने के लिए राष्ट्रीय रोग नियंत्रण कार्यक्रम को राज्य स्तर पर लागू करने और शोध के लिए 41.70 लाख डॉलर देगा। तपेदिक से निपटने के लिए अमेरिका पहले ही भारत में चार करोड़ डॉलर खर्च कर चुका है। इस संक्रामक, लेकिन इलाज योग्य बीमारी से भारत में हर दिन एक हजार लोग मरते हैं। वस्तुत: भारत में 18 से 59 की उम्र के लोगों की मौत में तपेदिक सबसे बड़ा कारण है। इस कारण करीब तीन अरब डॉलर का आर्थिक नुकसान भी झेलना पड़ता है।

अमेरिकी नागरिक टाइलर वाकर विलियम्स दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र संघ के उपाध्यक्ष चुने गए हैं। विलियम्स इस विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.फिल कर रहे हैं और काफी समय से परिसर की छात्र राजनीति में सक्रिय हैं। इससे पहले वह छात्र काउंसलर भी रह चुके हैं। विलियम्स ने इसी विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. की डिग्री हासिल की। उन्होंने ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फैडरेशन के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा और सर्वाधिक मत पाए। स्पैन से बातचीत में उन्होंने कहा कि उनकी कोशिश होगी कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में समाज के कमजोर तबकों से आने वाले विद्यार्थियों को मिलने वाली छात्रवृत्तियों की संख्या और उनकी राशि में इजाफा हो। विलियम्स का मानना है कि विद्यार्थियों को समानता के अवसर उपलब्ध कराना बहुत महत्वपूर्ण है। वह छात्र संघ की नई टीम के साथ विश्वविद्यालय परिसर में यौन उत्पीड़न के मामलों पर अंकुश लगाने के लिए बनी समिति को और स्वायत्त बनवाने का इरादा रखते हैं। उनका कहना है कि उन्हें चुनाव प्रचार के दौरान विदेशी नागरिक होने की वजह से कोई दिक्कत नहीं आई बल्कि विद्यार्थियों का जबर्दस्त समर्थन मिला।

हेमंत भटनागर